There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.

च—लोक तान्त्रिक विद्रन्द्रयर्ण अति आवश्यक है। स्टेटस जिला परिषद, पंचायतों की और अधिकार दिये जावें। इनके कर्मचारी उनके आधीन हों।

च—पृष्ठ तेरह (13) पर संगठन शीर्षक के नीचे आपके ध्यान मे लाना चाहता हूँ। कि बहुत से आधुनिक विचारको को रजिममे श्री Gunar Myrdal प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, श्री एल०सी० जैन वर्तमान सदस्य योजना आयोग और आंजील के लेखक जिसकी चर्चा मैंने उपर की हैं भी लगभग यह मान्यता है कि शोषण मुक्त समाज शेषकों द्वारा स्थापित नही की जा सकती, तथापि यह अवश्य माना गया हैं कि शोषण वर्ग में से कुछ व्यक्ति ऐसे निकलते रहे हो और भविष्य में भी निकलते रहेंगे जो शोषण मुक्त समाज की स्थापता के लिए पूरा प्रयास करते रहे हैं और करेंगे। मैंने यह चर्चा इस लिए की है कि जब इस महत्वपूर्ण विश्य को चर्चा लाडनू में 13-1-90 को हुई तो श्री देवेन्द्र भाई ने मुझे खुले शब्दों में कहा कि जिस वर्ग से हमारा सम्बन्ध है उसे वणिक वर्ग कहते हैं उनका व्यवसाय ही पैसा कमाना है चाहे किसी ढंग से भी कमाया जाऐ। उस समाज से आपका यह आशा करना कि वह शोषण मुक्त समाज की स्थापना करने में दिलचस्पी लेगी गलत है। यह शब्द मुझे सम्बोधित करते हुए कहे गये थे। मुझे आश्चर्य है कि और सदस्यो की भी लगभग यही राय थी। इस पर काफी वाद विवाद हुआ और मोटे तौर पर निर्णय हुआ कि अभी इस सम्बन्ध में कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सकता। केवल इस विषय पर विचार गोष्ठी हो सकती है। आपको याद होगा कि 14-1-90 को आप जब मार्गदर्शन के लिए मिलने आये और मैंने इस विषय की चर्चा पर कुछ समय लिया तो आप से मीटिंग के पश्चात श्री प्रकाश चन्द्र जैन ने मुझे कहा कि 'मैं इस विषय पर जरुरत से ज्यादा समय लेता हूं, दूसरे सदस्य इसे माईड करते हैं लेकिन मेरा लिहाज करते हुए बोलते नही''।

यह सुनकर मुझे दुःख हुआ। उपरोक्त बातें मैंने इसलिए लिखी हैं ताकि अपने हृदय की इस नयी पीड़ा की जानकारी आपको दूं। मेरी राय में शोषण युक्त समाज के आधीन आज के युग के सभी ज्वलन्त प्रश्न आ जाते हैं। ऐसे समाज की स्थापना होगी और देश उसकी तरफ बढ़ेगा तो बेरोजगारी, आर्थिक व सामाजिक प्राधीनता व असमनता जैसे सभी प्रश्नों का समाधान होता जायेगा। परन्तु मुझे खेद है कि वह व्यापारी वर्ग प्रायः अभी इन बातों को सुनना ही नहीं चाहता। उपाध्यक्ष योजना बोर्ड हरियाणा रहते और उसके पश्चात मैंने हरियाणा पंजाब के कई स्थानों पर व्यापारियों को इस विषय पर सम्बोधित किया है। परन्तु बहुत कम दिलचस्पी उन्होने दिखाई। मै कैसे उन्हे समझाऊ कि अपने वर्ग को छोड़कर समूचे समाज में उनका सम्मान काफी कम हो गया है। उड़ीसा, बंगाल और अब आसाम से उन्हें निकाला जा रहा है। हरियाणा में उन्हें राजनीति में कोई स्थान नहीं। इस वर्ग की बढ़ती माली हालत से विवशकता और अधिक हो गयी है। फलस्वरूप समाज में तनाव और बढ़ गया है। सरकारी कर्मचारी विशेष कर पुलिस उनकी रक्षा दिखावे मात्र करती है उन्हे शोषक कहा जाने लगा है। इसका समाधान क्या है। हो सकता है मेरे कहने के ढग में काफी कमी हो इसलिए 15-1-90 को जब अचानक मुझे कुछ शब्द कहने को कहा गया तो मैंने आप से प्रार्थना की थी कि शोषण रहित समाज की स्थापना के विषय को आप अपने हाथ में लें इससे न केवल 'अहिंसा परमो धर्म'' सिद्धान्त की महिमा बढ़ेगी जैसा कि अहिंसा के सिद्धान्त पर चल कर महात्मा गांधी जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन सफल को बनाया तो सारे विश्व में अहिंसा की महिमा बढ़ी। इसी प्रकार सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग करके शोषण मुक्त समाज की स्थापना से अहिंसा की महिमा बढ़ेगी क्योंकि इस द्वारा आज के युग के ज्वलन्त प्रश्नों का समाधान होगा।

अणुव्रत वर्ष के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए मैंने अपना मन केवल उन प्रोग्रामो की पूर्ति के लिए बनाया जो युवाचार्य जी के आदेश पर मैंने उन्हें लिखकर दिये थे। उन ज्वलन्त प्रश्नों में "शोषण मुक्त समाज की स्थापना और लोकतन्त्र की रक्षा'' दो मुख्य विषय हैं इनके बारे में हम ठोस कार्य न कर सके तो अणुव्रत वर्ग का कार्य ढीला ही नहीं रूटीन, (Routin) का हो जायेगा। अन्त में यह सुझाव भी देना चाहता हूं कि साल खत्म होने पर सारे काम का मूल्यांकन किया जावे और अच्छे काम करने वालों को सम्मानित किया जावे।

मैंने अपने विचार काफी स्पष्टता से आपके सामने रखे हैं। इस लम्बे पत्र के लिए आपसे क्षमा चाहता हूं और आशा हूं कि आपकी तरफ से इसका आशाजनक जबाब अवश्य मिलेगा।

आपका
मूल चन्द जैन

मूल चन्द जैन,

करनाल
दिनांक 10-12-1978

आदरणीय चौधरी चरण सिंह जी,

सादर प्रणाम

आज सुबह तीन बजे नींद खुल गई, प्रार्थना में बैठा तो प्रेरणा मिली कि आपको निम्न पत्र लिखूं। मेरी आस्था है कि शुद्ध अंन्राकरण से सोचा, कहा और किया काम ईश्वर की इच्छा है। इस पत्र को ईश्वर इच्छा समझ कर लिख रहा हूँ।

गांधी जी के जन्म दिन के शुभ अवसर पर 2 अक्तूबर को आपसे मिला था। आपने बड़े ध्यान से मेरी बात को सुना और उम्मीद से भी ज्यादा मुझे टाईम दिया। मैं आपके सामने यह विचार रखने आया था कि नेहरू जी के जमाने से भारत का आर्थिक ढांचा मगरबी सरमायेदारनि प्रथा व्यवस्था के ढांचा पर ढाला जा रहा है। इससे विशमता, बेरोजगारी और गरीबी लाईन से नीचे होने वालों की गिनती कम होने की बजाय दिन व दिन बढ़ी है। भारत के गरीबों के लिए गांधी जी का बताया हुआ आर्थिक प्रोग्राम ही सच्चा मददगार हो सकता है। उस प्रोग्राम के आप सबसे बड़े समर्थक हैं। हाल ही में आपने जो इतिहासिक किताब लिखी है वो इसकी ताजा मिसाल है।

इससे पहले भी मैंने आपके विचारों को सुना था। इस किताब ने मुझे आपका दिली admire बना दिया है। गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल हो गया तो भारत के करोड़ों गरीबों की आर्थिक गुलामी की बेड़ियां आप सदा सदा के लिये काट देंगे। इतना महान कार्य वही महापुरुष कर सकता है जिसकी इस प्रोग्राम में निष्ठा हो और हकुमत में इसका सुअवसर हिस्सा हो। इसलिये मैंने यह विचार रखने की जुरअत की थी कि चाहे प्रधान मन्त्री आपको होम मिनीस्टरी दोबारा न आफर (offer) करें, लेकिन अगर वो बाईज्जत तरीके से आपको वजारत में लेने की पेशकश करते हैं तो आप उसे इस प्रोग्राम की खातिर न ठुकरायें। आपने प्यार से मुझे समझाने की कोशिश की कि मोरार जी भाई का रवैया ऐसा है कि उनके साथ बाईज्जत काम करना लगभग नामुमकिन बन गया है। मेरा ख्याल था कि मोरार जी भाई स्वयं बड़े गांधी भगत हैं, इसलिये गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल करने में ये रूकावट की बजाये मददगार साबित होंगे। आपके इस विचार पर कि होम विभाग छोड़ कर आप किसी और विभाग के लिये तैयार हो गये तो लोग क्या कहेंगे? मैंने निवेदन किया था कि अब भी जनता में जहां आपके admirer हैं तो कुछ critic भी हैं। फिर भी रहेंगे। मुख्य बात है गांधी जी के आर्थिक प्रोग्राम पर अमल कराने का इतिहासिक काम। इसे आप सफल बना सके तो कुछ लोगों की नासमझ की नुक्ताचीनी को कोई अहमियत नहीं देनी चाहिये। मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपके विचार न बदल सका। मगर मुझे आशा थी कि कोई न कोई बाइज्जत रास्ता जरूर निकलेगा और भारत इन्दिरा की फिर से उभरती तानाशाही में बच सकेगा। मेरा यह भी ख्याल था कि पिछले चुनाव के मौके पर जो सागर मथन हुआ उससे जनता राज्य रूपी अमृत को पीने वाले तो बहुत हो गये। इस मथन से जहर पैदा हुआ (जनता पार्टी के छोटे बड़े लोगों में जो अहंकार बढ़ा) इस अहंकार रूपी जहर को पीने वाला भी तो कोई महापुरुष इस देश में निकलेगा। ईश्वर से मेरी प्रार्थना थी और है कि आप ऐसे महापुरुष सिद्ध हों। इसलिये 5-12-78 को मैंने आपको निम्न तार दिया :—

"Your numerous admirers and followers of Gandhiji's economic programme request you to drink the poison as Mahadev did in our mythology when ocean was churned. Numerous Gods were (and are) anxious to drink the Amrit produced. Only those save humanity and their country who drink cup of poison. None else can implement Gandhiji's economic programme. For its sake and country's poor and democracy even one's ego has to be suppressed."

मुझे पूर्ण आशा थी कि आप अपने आर्थिक प्रोग्राम को सफल बनाने के लिये medicators के निकाले हुये रास्ते को अपना कर अपनी पूरी बात न माने जाने के बावजुद वजारत में शामिल होने का जहर पी लेंगे। मगर विधाता को कुछ और मंजूर है। शायद आप और बड़ा जहर पीने लगे हैं।

मैं इस सारे दर्दनाक नाटक को गीता माता की कसौटी पर परखता हूँ तो घबरा सा जाता हूं। जहाँ तक मैंने गीता को समझा है, मनुष्य साम्य बुद्धि से, आसक्ति रहित हो कर फल आशा छोड़ कर, और लोक संग्रह की दृष्टि से कर्म करे, तो उसे ऐसे कर्म का दोष नही लगता आपने जरूर इन चार कसौटियों का ध्यान रखते हुये यह ऐतिहासिक फैसला किया होगा मगर आप मुझे क्षमा करेंगे कि मेरी समझ में यह फैसला नही आया।

आदर के साथ

आपका
(मूल चन्द जैन)

downloaded from moolchandjain.org

There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.

There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.

Another letter dated 19-11-79 to Sh. Charan Singh

MOOL CHAND JAIN
DEPUTY LEADER

HARYANA PRADESH LOK DAL
Dated the 13th November, 1979

Respected Ch. Charan Singhji,

In their short sightedness the capitalists in our country have identified you and the Lok Dal as their biggest enemies, However, you are enemy of only black marketters, hoarders and smugglers. The day yon refused to bargain with Mrs. Indira Gandhj and did not even care for the highest office of Prime Ministership has further hardened the attitude of the capitalists. For the last 30, years they have been amassing wealth through hook or crook. If need arose they did not hesitate to purchase not only the legislatore but even ministers and their relations, and friends. About you they were sure that you would never compromise with your principles. However. they never thought that you would so unhesitatingly kick the chair of the Prime Minister and would not give up your principles. This has furthei frightened them as they believe that you can never be purchased by them however high price they may offer. Hence they are trying their worst to malign you and the Lok Dal in the powerful Dailies which they command. According to my information, they en-block have switched their loyalty from Mrs. Indira Gandhi to Shri Jagjivan Ram and in my opinion this is the challenge we have to meet.

2. I am in the Lok Dal because I firmly believe that the country needs an economic revolution. Winning of political freedom was only a step in the march to economic independence of the nation. We cannot take the goal of economic independence to millions and millions of our people unless we follow the economic path advocated by Gandhi ji and now pleaded and advocated with passion by you. As this path will adversely affect the capitalists, they will resist it by all means available at their command. The masses, especially the peasants will have to be educated and trained as to who are now their real enemies. As stated earlier, the capitalists have identified you and the Lok Dal, apart from the Communists as their real enemies. If the peasants also identity their enemy, the battle line will be drawn aud if not today, tomorrow. the victory of the masses and the peasants over the capitalists is certain. Due to caste consideration, the peasants were earlier confused when legislation was passed against big land-owners who misguided their caste-men that even the small land-owners would be affected by the said legislation. Your leadership is now clearing the mist and the peasants are gradually realising who really is their enemy. If during the next 50 days we can educate them properly our victory in the coming elections is assured.

3. This sacred task requires an organisation of dedicated cadre and leadership not only at the centre but in all the states and districts. I do not claim to be in the knowledge of our Lok Dal organisation in other States but the little contacts which I have of cur central Lok Dal organisation and of Haryana State leadership, I feel that the organisation, is not at all equal to the task. I do not want ro name the individuals but from my contacts with them I find frustration writ-large on their faces. I tried to find out its reasons. The main reason, in my humble opinion, appears to be that there is no decentralization of decision making powers nor there is a mutual trust which should exist between those who run an organisation like ours. You will excuse me if I point out that there is a gap between you and the other top leaders in the party. None can narrow this gap except you and early steps have to be taken to remedy the situation.

श्री जैन का एक और पत्र जो 5-2-89 को चौधरी चरण सिंह जी को लिखा गया

आदरणीय चौधरी चरण सिंह जी

जय हिन्द

1-2 को रसोई से निकलते गिरने पर मेरी पत्नी की टांग की हड्डी टूट गई और मैं अपने इलाज के इलावा उसके इजाज में लग गया। कल रात तक उन्हें बेहद दर्द होता रहा ! मैं सोचता रहा और अब भी सोचता हूं कि मेरे परिवार में आठ नौ महीने में 2-3 ऐसी दुर्घटना हुई जिसमें हड्डियां टूटी और शरीरक कष्ट हुआ अवश्य ही यह बुरे कर्म का फल है या हमारे Mettel से कड़ी परीक्षा है बहरहाल "तेरे वहान मीठा लागे" के सिद्धान्त को मानते हुए यह कष्ट सहन किये जा रहे हैं। ...

संस्था के तौर पर लोकदल का सारा का काम अड़ोक है लोकदल संस्था चन्द महीनों से शुरु हुई है इसकी प्रान्तीये शाखाओं को संगठित करते समया काफी सावधानी चाहिये। इसलिये प्रान्तीये कमेटी मे उस प्रान्त के सबसे ज्यादा बअसर साथी नजरबन्द और कम बअसर लिये जाए तो ऐसी उढ़ोक कमेटी लोकदल के काम को आगे नहीं बढ़ा सकेगी। ये मेरी दृढ़ राय है।

मेरी लोकदल के प्रोग्राम और आपकी लीडरशिप आस्था है इसलिये मैं लोकदल को फलता फूलता देखना चाहता हुं और इसी हेतु पत्र लिखा है।

बहुत आदर और स्नेह के साथ

आपका
मूल चन्द जैन

श्री चरण सिंह लोकदल अध्यक्ष, 16-6-80 को लिखे पत्र के मुख्य अंश

नौ विधान सभाओं के चुनाव परिणामों की चर्चा करते हुए श्री जैन ने लिखा कि विरोधी दल एक होकर या सीटों पर समझौता करके चुनाव लड़ते तो कई प्रदेशों मे कांग्रेस की बजाये जो विरोधी दलों की सरकारे बनती एमरजंन्सी के वाद आप सबसे ज्यादा इस दिशा में प्रयत्न करते रहे।

जनवरी में लोकसभा के चुनावों ने और अब मई में नौ विधान सभाओं के चुनावों ने दिखा दिया कि हम जनता में अपना कितना विश्वास खो चुके है। बावजूद कमर तोड़ महगाई काग्रेस 8 प्रदेशो मे जीत गई।

यह ठीक है कि U.P. और बिहार के गर्वनरों ने काफी दख्लनदाजी की और इन्दिरा कांग्रेस ने रूपया पानी की तरह बहाया। मगर जनता इस आरोप पर बहुत अमीयत नहीं दे रही कहती है कि जनता साथ हो पैसा और सरकारी दख्लनदाजी धरी की धरी रह जाती है 1977 के लोकसभा चुनावों मे ऐसा ही हुआ। दूसरी और श्रीमति इन्दिरा गांधी ने अपनी हार के बाद काग्रेस में जान-बुझ कर दो फाड़ करवाये बहुत कम चौटी के कांग्रेसी नेता उनके साथ थे। धीरे-धीरे जनता को अपने साथ लगाया। और 1980 के मध्यवर्ती चुनाव मे जनता ऐमरजन्सी के जुल्म भी भूल गई और इन्दिरा जी दुबारा सत्ता में आई।

आपसे मैंने जब इन बातों की चर्चा की तो आपने कहा कि इन्दिरा गांधी और मुझ में एक बहुत बड़ा फर्क है वो अपनी जीत के लिये हर जाईज-नजाईज हथकण्डा प्रयोग कर लेती है मैं ऐसा नहीं कर सकता मुझ पर गांधी जी की शिक्षा का प्रभाव है।

लेकिन अंग्रेज भी गांधी जी के विरुद्ध हर हथकण्डे का प्रयोग कर देते थे फिर भी अन्त जीत गांधी जी की हुई। उसका कारण मोटे तौर तो यह कहा जा सकता है कि गांधी जी के युग में जनता में त्याग की भावना ज्यादा थी अब स्वार्थ की भावना ज्यादा है। ये कहते हुए भी इस महत्वपूर्ण बात को याद रखना होगा जब परिस्थिति बिगड़ती थी तो उसकी जुम्मेदारी गांधी जी खुद ले लेते थे और उसके लिये पश्चाताप के तौर पर कभी Publicy अपनी गल्ती स्वीकार करते थे, कभी व्रत यहां तक के मरणव्रत करते थे ! आज मुश्किल यह हो गई है कि परिस्थिति बिगड़ने पर कोई नेता स्वय जिम्मेवारी लेने को तैयार नही। परिस्थिति बिगड़ने की जुम्मेवारी सदा दूसरों पर डाली जाती है यह ठीक है दूसरों की भी जिम्मेवारी होती है वो गहराई से सोचे तो मालूम होगा कि उनकी जुम्मेदारी भी परिस्थिति बिगाड़ने में रही है।

मेरा दृढ़ मत है कि जितनी देर भारत के नेता इस बुनियादी बात को सच्चे दिल से स्वीकार नहीं करेगे यहां के हालत नही सुधरेगे और न ही अलग-2 राजनैतिक संस्थाओं के।

एक और महत्वपूर्ण अन्तर गांधी जी और आज के नेताओं में है गांधी जी अपने साथियों कार्यकर्तातों को सत्यग्रह अन्दोलन के हथियार समझते थे शायद ही कभी उन्होने अपने इन हथियारों की निन्दा की हो। अपितु वो अपने इन हथियारों को Sarpan

There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.

There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.

4. I have just spoken about the causes of this gap there is also the differance of approach to various problems between you and the other leaders. Being a Gandhian you try to follow Gandhian principles even in the State matters. However most of us are mundane politicians and some times do not strictly follow those principles. A meeting point has to be found between the two views. However, there has been no such meeting point. This situation has to be remedied.

5. It will be presumptuous on my part to ask you to come down from your high pedestral but a difference has fo be recognised between the position Gandhi Ji occupied and the position you occupied as Prime Minister. Gandhi Ji after the thirties cid not hold any office even in the congress organisation. He ceased to be even a four annas member and therefore, he could adhere to his high principles and lead the Congress Working Committee to follow any course which, to Gandhi Ji, was not upto the mark. In my humble opinion this is not always open to a Prime Minister.

6. Even Gandhi Ji had to devise methods to meet certain situations and these methods could not certainly be called of the highest level. I may be allowed to cite a few instances :—

(a) In 1937 when the Congress Working Committee decided to accept office in provinces where the congress secured majority, after the British Govt had assured that the Governors would not interfore in the day-to-day working of the congress Ministries, a ticklish question arose that the congress Ministers would have to take oath of allegiance to the British King And how could they do so after the congreos had taken pledge of complete Independence on 26th January, 1930. However, Gandhi Ji was a practical man and he at once wrote in the Harijan that oath of allegiance was a formal matter and there was no harm (breach of oath) in taking such an oath.

(b) When Bhula Bhai Desai wat elected leader of the congress party in the Central Assembly, one critic met Gandhi Ji and mentioning some grave draw-backs in his character asked Gandhi Ji how could such a man be allowed to be elected leader of the congress party. Gandhi Ji heard him patiently, and at the end remarked that he knew even more draw-backs in Desal's character but if the critic could point out a man who had not the draw-backs of Bhula Bhai Desai but has all his qualifications, he would certainly replace Shri Desai. The critic was silent.

7 Other instances can be given but this letter is already too long. My only purpose in giving these instances is not to ask you to come down from your pedestral but to find out a meeting point between you aud your immediate followers so that the practical problems facing the organisation are solved.

I wish I could discuse this subject with you personally in greater detail. Had a practical view of the situation been taken action against the Bhajan Lal Ministry could easily have been taken under article 356 of the Constitution without compromise to your high principles The Law Minister certainly gave a wrong advice He is not a bigger constitutional authority than S/Shri Daftry, Chhagla, Nariman and Jethmalani. I shall be grateful if some time is fixed for this purpose and I am informed.

With kind regards,

Yours sincerely,

(Mool Chand Jain)

Ch. Charan Singh Ji
Ex. P.M.
President Lok Dal
New Delhi

downloaded from moolchandjain.org

करने का सदा प्रयास करते रहते थे। कितने नेताओं की प्रशंसा करके गांधी जी ने उनका निर्माण किया वो हमेशा अपने मुख्य साथियों को साथ लेकर चलने का प्रयास करते थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि व्यक्तिगत सत्यग्रह ढीला पड़ने पर अप्रैल 1942 में ही गांधी जी ने अपने हरिजन साप्ताहिक "अंग्रेजों भारत छोड़ो" की बात शुरू कर दी थी दूसरा विश्व युद्ध पूरे जोरों पर था हिटलर का बोलबाला था जवाहर लाल जी सोचते थे उस वक्त ऐसा आन्दोलन छेड़ना हिटलर की मदद करना होगा। गांधी जी को जब इस विचार का पता चला तो पण्डित नेहरु को "वारदा" बुलाया लगभग दस दिन बात चलती रही। अन्त में नेहरु ने नये आन्दोलन की जरूरत को स्वीकार किया जब भारत छोड़ो को प्रस्ताव 8 अगस्त को बम्बई में पास किया गया।

और बहुत से उदाहरण दिये जा सकते है। वे सब कुछ मैं इसलिये लिख रहा हूं कि आप गांधी वादी है लक्ष्य तक पहुँचने के लिये शुद्ध साधन अपनाना चाहते है मैं लोकदल में इसलिये हूँ कि इसका आर्थिक प्रोग्राम गांधी जी के प्रोग्राम के अनुसार है और लोकदल के नेता चौधरी चरण सिंह गांधीवादी है परन्तु संस्था को चलाने मे और साथियों से काम लेने में भी हमें गांधी का अनुसरण करना चाहिए।

देश के बटवारे के प्रश्न पर गांधी जी ने जब यह देखा कि कांग्रेस दृष्टिमान भारी बहुमत बटवारे के हक में हैं तो अपना विरोध वापिस न लिया इसलिये उन्होंने सोचा उन हालत में बटवारे का विरोधकर कांग्रेस हाईकमान कि अपेक्षा मे नया नेतृत्व पैदा करना होगा। जो कि उस आयु मे वे नहीं कर सकते थे।

आपकी आयु का भी सवाल है भगवान करे आप पचास साल और जीवित रहें। मगर मेरा आपसे नम्र निवेदन है आप अपने साथियों की अन्य लोगों से निन्दा न करे। किसी में कमी है तो उसे अलग समझाये ऐसा प्रबन्ध करे उस कमी की हानि संस्था को न हो।

धन्यवाद।

भवदीय,
मूल चन्द जैन
हरियाणा मंत्री

9-3-81 चौधरी चरण सिंह लोकदल, को लिखे पत्र के कुछ अंश

आदरणीय चौधरी चरण सिंह जी,

जय हिन्द

7 मई को आपने मुझे तुरन्त मिलने का समय दिया उसके लिये अति धन्यवाद।

चौ० देवी लाल में कई कमीयां है गुण भी है अहंकार भी है लेकिन हकीकत यह ही है कि उन जैसा अनथक कार्यकर्ता हरियाणा में कोई नहीं है। अधिकतर कार्यकर्ता उनका बेहद आदर करते हैं। कुछ उनके विरुद्ध भी हैं। विरोधी आपके पास आकर उनके अवगुणों बहुत बढ़ा चढ़ाकर बताते है। पिछले कई माह में देवी लाल जी से कुछ ऐसी गलतियां हो गई जिनके कारण आप उनसे Prejdice हो गये हैं लोकदल परिलमैन्ट पार्टी की मीटिंग मे उनसे जो गलती हुई मुझे उसका पता लगा मैंने उसे साफ साफ कह दिया था बादमें आपसे लिखित रुप से आपसे माफी भी मांग ली थी मगर आप उस घटना को भूले नहीं इसलिये उसके विरुद्ध आपका रवैया Conditioned रहता है। आपसे क्षमा मांगते मैंने आपसे यह कहने की हिम्मत तो थी आपने स्वीकार किया कि वास्तव में आपने देवी लाल के प्रति Conditioned है आपने यह भी कहा कि आप सन्यासी नहीं राजनैतिज्ञ हैं इस पर मैंने यह कहने की हिम्मत कि आपको सन्यासी बनना पड़ेगा आप केवल राजनैतिज्ञ नहीं हैं एक आन्दोलन के जन्मदाता हैं। क्षमा वृति के बिना कोई आन्दोलन सफल खड़ा नहीं हो सकता अपने शस्त्रों का हवाला देकर मैं यह भी कहना चाहता था कि क्षमा वीरों का आभूषण है यह भी कहना चाहता था कि किसी व्यक्ति का मन अन्य के प्रति Conditioned हो जाता हैं तो वो व्यक्ति चाहे कितनी बड़ी पदवी पर हो उस प्रश्न की बाबत ठीक निर्णय नहीं ले सकता। ऐसे निर्णय में कोई न कोई दोष रह जाया करता है।

इन हालत में मेरा सुझाव था जब तक आपके मन को यह अवस्था रहे आप इन विशेषज्ञों पर जिनका प्रभाव देवी लाल पर पड़ सकता हो जानेदार जानकर परमेन्टरी बोर्ड के हवाले कर दे। मैं अपने एक पूर्व पत्र में भी लिखी एक बात को दोहराना चाहता हूं किसी संस्था का निर्माण तब तक नहीं हो सकता जब तक उसमें पैदा हुए जहर को शंकर भगवान की तरह पीने वाला न हो। आप गांधी जी के भक्त हैं गांधी ने समय-समय अपने जीवन में इस जहर को पिया इसलिये तो देश को स्वतन्त्रता करवाने का महा कार्य कर सके।

मूल चन्द जैन

There are 6 pages in this PDF. Page 4 and 5 are interchanged in the original publication. Please see all pages to read the letters in continuity.